



370 के बाद कश्मीर

जम्मू कश्मीर में अनुच्छेद 370 को समाप्त करने के साथे चार साल बाद प्रधानमंत्री मोदी पहली बार कश्मीर घटाई में गए, तोकिंजाएं बदली हुई थी। प्रधानमंत्री भी युनाइटेड और लद्दाख क्षेत्रों में जाते रहे हैं, लेकिन घटाई में पहुंचना उनके लिए भी युनाइटेड थी। बहुत हाल अब 'जन्म' का नैसर्गिक विपरीत रहा है। कश्मीर घटाई मन और सोच से भाजपा-विरोधी रही है, लेकिन अब 'हम हिंदुस्तानी हैं', 'भारत माता की जय' के नारे बुलंद थे। असंख्य लोगों को एक स्वर में उद्घोष करने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता। अक्सर राजनीतिक जनसभाएं प्रायोजित होती है, भीड़ को लाया जाता है, लेकिन टीवी चैनलों पर आम कश्मीरी के बाल सुनें, तो एकबारी लगा कि कश्मीर अब खुलकर सास लेने लगा है। आतंकवाद की घटनाओं में 73 फीसदी की कमी आई है। नारीकों की मौतें 81 फीसदी तक कम हुई हैं।

अलगावाद का खाता इसी से साफ है कि अब घटाई में दुकान, बाजार, फैक्ट्री, स्कूल, कॉलेज आदि के बांद करने वाली आवाजें खामोश हैं। पत्थरवाजी की घटनाएं 'शून्य' हैं। शारदा मंदिर में इस बार दीपवली मनाई गई। सिनेमा हाल खुल चुके हैं। दलितों, स्थानीय समुदायों का आश्रण मिला है और महिलाओं के संघीयताके लिए बाध्य नहीं किया जा सकता। अक्सर राजनीतिक जनसभाएं प्रायोजित होती है, भीड़ को लाया जाता है, लेकिन टीवी चैनलों पर आम कश्मीरी के बाल सुनें, तो एकबारी लगा कि कश्मीर अब खुलकर सास लेने लगा है। आतंकवाद की घटनाओं में 73 फीसदी की कमी आई है।

अलगावाद की घटनाएं 'शून्य' हैं। शारदा मंदिर में इस बार दीपवली मनाई इसी से साफ है कि अब घटाई में दुकान, बाजार, फैक्ट्री, स्कूल, कॉलेज आदि के बांद करने वाली आवाजें खामोश हैं। पत्थरवाजी की घटनाएं 'शून्य' हैं। शारदा मंदिर में इस बार दीपवली मनाई गई। सिनेमा हाल खुल चुके हैं। दलितों, स्थानीय समुदायों का आश्रण मिला है और महिलाओं के संघीयताके लिए बाध्य नहीं किया जा चुके हैं। कश्मीरी महिलाएं अपना जीवन-साथी 'गैर कश्मीरी' को भी चुन सकती हैं। औरतों को संपर्क खोरादने की आजाइ है। अब उनकी पैतृक संपत्ति में भी हिस्सेदारी नहीं है। अब कश्मीर में जी-20 की बैठकें हुई हैं, तो विदेशी प्रतिनिधियों ने नेटवर्क बढ़ाव दिया। बीते साल 2 करोड़ से अधिक पर्यटक कश्मीर के हसीन, खेड़ सुखात वायिदों का आवाजाही खुली और बही ही, तो डल झील का नारूनी सौंदर्य भी लौट आया है।

कश्मीरी के संवैधानिक अधिकार बहाल किए जा चुके हैं। कश्मीरी महिलाएं अपना जीवन-साथी 'गैर कश्मीरी' को भी चुन सकती हैं। औरतों को संपत्ति खोरादने की आजाइ है। अब उनकी पैतृक संपत्ति में भी हिस्सेदारी तय है। अब कश्मीर में जी-20 की बैठकें हुई हैं, तो विदेशी प्रतिनिधियों ने नए

कश्मीरी देखा और आनंद लिया। बीते

अव थी होगा, लेकिन आम कश्मीरी का साल 2 करोड़ से अधिक पर्यटक कश्मीरी की हसीन, खेड़ सुखात वायिदों का और रोजगार की दिक्कत है। वह इससे सुख लेने आए, तो सरकार ने 30 सालों के लिए प्रायोगिक मॉडल पर आपनी 11 संपत्तियों को आउटसोर्स करने की योजना बनाई। होमरेट पर खास जोर दिया जा रहा है।

कश्मीरी देखा और आनंद लिया। बीते

अव थी होगा, लेकिन आम कश्मीरी का

साल 2 करोड़ से अधिक पर्यटक

कश्मीरी की हसीन, खेड़ सुखात वायिदों का और रोजगार की दिक्कत है। वह इससे

सुख लेने आए, तो सरकार ने 30 सालों के

के लिए प्रायोगिक मॉडल पर आपनी 11

संपत्तियों को आउटसोर्स करने की

योजना बनाई। होमरेट पर खास जोर

दिया जा रहा है।

टीमों के सदस्य हैं। करीब 15 लाख परिवारों को 'पानी मुहूर्या कराया गया। सबसे अहम यह है कि राष्ट्रीय ध्वज 'तिरंगा' फिजाओं में लहरा रहा है और भारत का संविधान, संसद द्वारा पारित किए गए कानून अब कश्मीर-कश्मीर में भी प्राचीवी और प्रासादिक है। कश्मीरी में दो एम्स खुल चुके हैं, जाहिर है कि स्वास्थ्य भी सरकार के लिए अहम सरोकार है ये तमाम उपलब्धियाँ और बदलाव एक ही दौर की देन नहीं हैं और नहीं किसी व्यक्ति-विशेष से जुड़ी है। यह बीते 10 साल का व्यथार्थ है, जो कश्मीरी में अब मूर्त्ति रूप ले रहा है। बेशक इनकी सुरक्षाधार भारत सरकार रही है और सर्वांग अदालत ने भी दखल देकर 370 की पेचिंदियों को खोला है।

प्रधानमंत्री मोदी भी श्री के पात्र हैं, जिन्होंने ऐसी योजना जैवन-एवं बायावाई और उड़े लागू कराया। हालांकि आतंकवाद अब चंद इलाकों में सिमटा है।

टीमों के सदस्य हैं। करीब 15 लाख परिवारों को 'पानी मुहूर्या कराया गया। सबसे

अहम यह है कि राष्ट्रीय ध्वज 'तिरंगा'

फिजाओं में भी प्राचीवी और प्रासादिक है। कश्मीरी में दो एम्स खुल चुके हैं, जाहिर है कि स्वास्थ्य भी सरकार के लिए अहम सरोकार है ये तमाम उपलब्धियाँ और बदलाव एक ही दौर की देन नहीं हैं और नहीं किसी व्यक्ति-विशेष से जुड़ी है। यह बीते 10 साल का व्यथार्थ है, जो कश्मीरी में अब मूर्त्ति रूप ले रहा है। बेशक इनकी सुरक्षाधार भारत सरकार रही है और सर्वांग अदालत ने भी दखल देकर 370 की पेचिंदियों को खोला है।

प्रधानमंत्री मोदी भी श्री के पात्र हैं, जिन्होंने ऐसी योजना जैवन-एवं बायावाई और उड़े लागू कराया। हालांकि आतंकवाद अब चंद इलाकों में सिमटा है।

टीमों के सदस्य हैं। करीब 15 लाख परिवारों को 'पानी मुहूर्या कराया गया। सबसे

अहम यह है कि राष्ट्रीय ध्वज 'तिरंगा'

फिजाओं में भी प्राचीवी और प्रासादिक है। कश्मीरी में दो एम्स खुल चुके हैं, जाहिर है कि स्वास्थ्य भी सरकार के लिए अहम सरोकार है ये तमाम उपलब्धियाँ और बदलाव एक ही दौर की देन नहीं हैं और नहीं किसी व्यक्ति-विशेष से जुड़ी है। यह बीते 10 साल का व्यथार्थ है, जो कश्मीरी में अब मूर्त्ति रूप ले रहा है। बेशक इनकी सुरक्षाधार भारत सरकार रही है और सर्वांग अदालत ने भी दखल देकर 370 की पेचिंदियों को खोला है।

प्रधानमंत्री मोदी भी श्री के पात्र हैं, जिन्होंने ऐसी योजना जैवन-एवं बायावाई और उड़े लागू कराया। हालांकि आतंकवाद अब चंद इलाकों में सिमटा है।

टीमों के सदस्य हैं। करीब 15 लाख परिवारों को 'पानी मुहूर्या कराया गया। सबसे

अहम यह है कि राष्ट्रीय ध्वज 'तिरंगा'

फिजाओं में भी प्राचीवी और प्रासादिक है। कश्मीरी में दो एम्स खुल चुके हैं, जाहिर है कि स्वास्थ्य भी सरकार के लिए अहम सरोकार है ये तमाम उपलब्धियाँ और बदलाव एक ही दौर की देन नहीं हैं और नहीं किसी व्यक्ति-विशेष से जुड़ी है। यह बीते 10 साल का व्यथार्थ है, जो कश्मीरी में अब मूर्त्ति रूप ले रहा है। बेशक इनकी सुरक्षाधार भारत सरकार रही है और सर्वांग अदालत ने भी दखल देकर 370 की पेचिंदियों को खोला है।

प्रधानमंत्री मोदी भी श्री के पात्र हैं, जिन्होंने ऐसी योजना जैवन-एवं बायावाई और उड़े लागू कराया। हालांकि आतंकवाद अब चंद इलाकों में सिमटा है।

टीमों के सदस्य हैं। करीब 15 लाख परिवारों को 'पानी मुहूर्या कराया गया। सबसे

अहम यह है कि राष्ट्रीय ध्वज 'तिरंगा'

फिजाओं में भी प्राचीवी और प्रासादिक है। कश्मीरी में दो एम्स खुल चुके हैं, जाहिर है कि स्वास्थ्य भी सरकार के लिए अहम सरोकार है ये तमाम उपलब्धियाँ और बदलाव एक ही दौर की देन नहीं हैं और नहीं किसी व्यक्ति-विशेष से जुड़ी है। यह बीते 10 साल का व्यथार्थ है, जो कश्मीरी में अब मूर्त्ति रूप ले रहा है। बेशक इनकी सुरक्षाधार भारत सरकार रही है और सर्वांग अदालत ने भी दखल देकर 370 की पेचिंदियों को खोला है।

प्रधानमंत्री मोदी भी श्री के पात्र हैं, जिन्होंने ऐसी योजना जैवन-एवं बायावाई और उड़े लागू कराया। हालांकि आतंकवाद अब चंद इलाकों में सिमटा है।

टीमों के सदस्य हैं। करीब 15 लाख परिवारों को 'पानी मुहूर्या कराया गया। सबसे

अहम यह है कि राष्ट्रीय ध्वज 'तिरंगा'

फिजाओं में भी प्राचीवी और प्रासादिक है। कश्मीरी में दो एम्स खुल चुके हैं, जाहिर है कि स्वास्थ्य भी सरकार के लिए अहम सरोकार है ये तमाम उपलब्धियाँ और बदलाव एक ही दौर की देन नहीं हैं और नहीं किसी व्यक्ति-विशेष से जुड़ी है। यह बीते 10 साल का व्यथार्थ है, जो कश्मीरी में अब मूर्त्ति रूप ले रहा है। बेशक इनकी सुरक्षाधार भारत सरकार रही है और सर्वांग अदालत ने भी दखल देकर 370 की पेचिंदियों को खोला है।

प्रधानमंत्री मोदी भी श्री के पात्र हैं, जिन्होंने ऐसी योजना जैवन-एवं बायावाई और उड़े लागू कराया। हालांकि आतंकवाद अब चंद इलाकों म

